56 आर्थिक विकास में राज्य की भूमिका

(राज्य का हस्तक्षेप, उत्पादन एवं वितरण का नियंत्रण, औद्योगिक लाइसेंसिग, सार्वजनिक वितरण प्रणाली एवं राशनिंग)

अभ्यास

❖ **बहुविकल्पीय प्रश्न**

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर के लिए पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ संख्या- 557 व 558 का अवलोकन कीजिए।

❖ **अतिलघुउत्तरीय प्रश्न**

अतिलघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर के लिए पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ संख्या- 558 व 559 का अवलोकन कीजिए।

❖ **लघुउत्तरीय प्रश्न**

1. औद्योगिक विकास में राज्य के हस्तक्षेप की आवश्यकता को स्पष्ट करने वाले तीन तर्क प्रस्तुत कीजिए।

उ०– आर्थिक विकास में राज्य के हस्तक्षेप की आवश्यकता– आर्थिक विकास में राज्य (सरकार) के हस्तक्षेप की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से होती है–

(i) विकास का वातावरण बनाने के लिए– विकासशील राष्ट्र अशिक्षा, अंधविश्वास, भाग्यवादिता तथा सड़ी-गली परंपराओं से ग्रसित होते हैं। अत: वहाँ आर्थिक विकास का वातावरण नहीं होता। ऐसे में राज्य ही आर्थिक विकास का वातावरण अपने हस्तक्षेप द्वारा बना सकता है।

(ii) प्रेरणा का स्रोत बनने के लिए– राज्य सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनीतिक मूल्यों में परिवर्तन लाकर अपने हस्तक्षेप द्वारा राष्ट्र में आर्थिक विकास के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है।

(iii) योग्य तथा कुशल नेतृत्व देने के लिए– राज्य आर्थिक विकास के लिए अपने हस्तक्षेप द्वारा देश को योग्य और कुशल नेतृत्व देकर देश में आर्थिक विकास को गतिमान बना सकता है।

2. राजकोषीय नीति क्या है? इसके मुख्य उपकरण बताइए।

उ०– राजकोषीय नीति सरकार की आय, व्यय, सार्वजनिक ऋण तथा वित्त व्यवस्थाओं का समूह होती है। प्रो० आर्थर स्मिथीज ने राजकोषीय नीति को इन शब्दों में परिभाषित किया है, "राजकोषीय नीति वह नीति है, जिसमें सरकार अपने व्यय तथा आगम के कार्यक्रम को राष्ट्रीय आय, उत्पादन अथवा रोजगार पर वांछित प्रभाव डालने और अवांच्छित प्रभावों को रोकने के लिए प्रयुक्त करती है।" सरकार की राजकोषीय नीति करारोपण (आय), सार्वजनिक व्यय तथा सार्वजनिक ऋणों के द्वारा आर्थिक विकास पर वांछित प्रभाव डालने का उपाय होती है।

राजकोषीय नीति के उपकरण– सरकार राजकोषीय नीति के अनुपालन हतु निम्न उपकरणों को प्रयोग में लाती है–
(i) करारोपण, (ii) सार्वजनिक ऋण, (iii) सार्वजनिक व्यय

3. राजकोषीय नीति के तीन महत्वपूर्ण तथ्यों को स्पष्ट कीजिए।

उ०– राजकोषीय नीति के महत्वपूर्ण तथ्य– राजकोषीय नीति के तीन महत्वपूर्ण तथा निम्नलिखित तथ्यों को जानना आवश्यक होता है–

(i) कर लगाकर उपभोग को नियंत्रित करना तथा पूँजी-निर्माण को बढ़ाना।
(ii) प्रगतिशील करों द्वारा आय की विषमताओं को घटाना।
(iii) आय तथा व्यय में परिवर्तन करके निजी निवेश को हतोत्साहित या प्रोत्साहित करके आवश्यक उद्योगों की स्थापना पर बल देना।

4. मौद्रिक नीति से क्या अभिप्राय है? इसे किसके माध्यम से लागू किया जाता है?

उ०– मौद्रिक नीति– सरकार अथवा केंद्रीय बैंक की वह नीति, जिसके द्वारा आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु मुद्रा की मात्रा, ब्याज

दर तथा उसके उपभोग की मात्रा पर नियंत्रण बनाया जाता है, मौद्रिक नीति कहलाती है। केंद्रीय बैंक मौद्रिक नीति में परिवर्तन करके भुगतान संतुलन को बनाए रखने तथा मुद्रा प्रसार पर नियंत्रण लगाने के उपाय अपना सकता है। प्रो. हैरी जी जॉन्सन ने मौद्रिक नीति को इन शब्दों में परिभाषित किया है, "मौद्रिक नीति का अर्थ केंद्रीय बैंक की उस नियंत्रण नीति से है, जिसके द्वारा केंद्रीय बैंक आर्थिक नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से मुद्रा की पूर्ति पर नियंत्रण करता है।" मौद्रिक नीति साख की पूर्ति तथा उपभोग पर नियंत्रण बनाने का कार्य करती है। मौद्रिक नीति को भारत सरकार अथवा केंद्रीय बैंक, भारतीय रिजर्व बैंक के द्वारा लागू किया जाता है।

5. भारत का केंद्रीय बैंक कौन-सा है? उसके तीन प्रमुख कार्य लिखिए।

उ०– भारत का केंद्रीय बैंक भारतीय रिजर्व बैंक है। इसके तीन प्रमुख कार्य निम्नलिखित है–

(i) केंद्रीय सरकार तथा राज्य सरकारों के नकद कोष रखना।

(ii) सार्वजनिक ऋणों की व्यवस्था करना।

(iii) बैंकों को लाइसेंस प्रदान करना।

❖ विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. भारत के आर्थिक विकास में राज्य के हस्तक्षेप की आवश्यकताओं का वर्णन कीजिए।

उ०– भारत के आर्थिक विकास में राज्य के हस्तक्षेप की आवश्यकता– भारत के आर्थिक विकास में राज्य (सरकार) के हस्तक्षेप की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से होती है–

(i) विकास का वातावरण बनाने के लिए– भारत जैसे विकासशील राष्ट्र अशिक्षा, अंधविश्वास, भाग्यवादिता तथा सड़ी-गली परंपराओं से ग्रसित होते हैं। अत: वहाँ आर्थिक विकास का वातावरण नहीं होता। ऐसे में राज्य ही आर्थिक विकास का वातावरण अपने हस्तक्षेप द्वारा बना सकता है।

(ii) प्रेरणा का स्त्रोत बनने के लिए– राज्य सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनीतिक मूल्यों में परिवर्तन लाकर अपने हस्तक्षेप द्वारा राष्ट्र में आर्थिक विकास के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन जाता है।

(iii) योग्य तथा कुशल नेतृत्व देने के लिए– राज्य आर्थिक विकास के लिए अपने हस्तक्षेप द्वारा देश को योग्य और कुशल नेतृत्व देकर देश में आर्थिक विकास को गतिमान बना सकता है।

(iv) प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का श्रेष्ठतम उपयोग करने के लिए– राज्य अपने कुशल नेतृत्व तथा उचित हस्तक्षेप द्वारा राष्ट्र में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों एवं मानवीय संसाधनों के कुशल सामंजस्य तथा श्रेष्ठतम उपयोग करने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

(v) औद्योगिक लाइसेंसिंग तथा उचित कर-प्रणाली के निर्धारण के लिए– सरकार आर्थिक विकास तथा औद्योगिक उत्पादन पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए उचित लाइसेंसिंग तथा कर-प्रणाली लागू कर आर्थिक विकास में अपना उचित निर्देशन सुलभ करा सकती है।

(vi) उपर्युक्त कानूनों का निर्माण करने के लिए– आर्थिक विकास पर नियंत्रण रखना तथा औद्योगिक उत्पादन की मात्रा का उचित निर्धारण करना, सरकार द्वारा निर्मित कानूनों पर निर्भर करता है। अत: इन सब कार्यों के लिए उचित कानून बनाने हेतु सरकार का हस्तक्षेप आवश्यक हो जाता है।

(vii) विदेशी व्यापार के लिए उचित नीति का निर्धारण करने के लिए– राष्ट्र का आर्थिक विकास अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सर्वाधिक निर्भर करता है। विदेशी व्यापार व्यापारिक समझौतों द्वारा संपन्न किए जाते हैं। इन समझौतों को क्रियान्वित करने के लिए सरकार का आर्थिक विकास में हस्तक्षेप आवश्यक है।

(viii) विदेशी निवेश को कानूनी रूप से आकर्षित करने के लिए– आर्थिक विकास को गति देने के लिए सरकार अपने उद्योगों में विदेशी निवेश को आकर्षित कर औद्योगीकरण को बढ़ावा देती है। विदेशी पूँजी के निवेश के लिए उचित कानून बनाने हेतु आर्थिक विकास में सरकार का हस्तक्षेप आवश्यक बन जाता है।

(ix) अधिकतम सामाजिक कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए– आर्थिक विकास तभी सार्थक है, जब इसका

लक्ष्य सामाजिक न्याय की स्थापना कर अधिकतम सामाजिक कल्याण से जुड़ा हो। सरकार अपने वैध हस्तक्षेप से इस लक्ष्य को पाने में सहभागिता निभा सकती है। अत: उसका हस्तक्षेप आवश्यक बन जाता है।

2. आर्थिक विकास में राज्य के हस्तक्षेप के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

उ०– आर्थिक विकास में राज्य के हस्तक्षेप के उद्देश्य– आर्थिक विकास में राज्य अपना हस्तक्षेप निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करता है–

(i) सीमित एवं उपयोगी प्राकृतिक संसाधनों का योजनाबद्ध और विवेकपूर्ण विदोहन करने के लिए।

(ii) मानवीय संसाधनों पर पूँजी निवेश कर उन्हें कुशल तथा दक्ष बनाकर आर्थिक विकास में भागीदार बनाने के लिए।

(iii) क्षेत्रीय असमानताओं को न्यूनतम करने के लिए उद्योगों का उचित ढंग से विकेंद्रीकृत करने हेतु।

(iv) राष्ट्र का सर्वांगीण आर्थिक तथा औद्योगिक विकास करने के लिए।

(v) एकाधिकारी कुप्रवृत्तियों पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिए।

(vi) आर्थिक विषमता का अंत करने के लिए।

(vii) विदेशी विनिमय का विवेकपूर्ण उपयोग करने के लिए।

(viii) राष्ट्रहित में विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए।

(ix) सामाजिक न्याय और समाज कल्याण की स्थापना के लिए।

3. राजकोषीय नीति क्या है? उसके उपकरणों पर प्रकाश डालिए।

उ०– राजकोषीय नीति– इसके लिए लघु उत्तरीय प्रश्न संख्या- 2 के उत्तर का अवलोकन कीजिए।

राजकोषीय नीति के उपकरण- सरकार राजकोषीय नीति के अनुपालन हेतु निम्न उपकरणों को प्रयोग में लाती है–

(i) करारोपण– कर सरकार की आय का मुख्य स्रोत तथा नागरिकों द्वारा दिए जाने वाला अनिवार्य अंशदान है। सरकार इसे राजकोषीय नीति के एक उपकरण के रूप में निम्नवत् प्रयोग करती है–

(क) धनवान लोगों पर अधिक कर लगाकर धन के वितरण में समानताएँ लाई जाती हैं।

(ख) प्रगतिशील कर प्रणाली का अनुसरण करते हुए तथा न्यूनतम आय के स्तर को कर मुक्त रखकर, आय की असमानता घटाई जाती है।

(ग) विलासिता की वस्तुओं पर ऊँचे कर लगाकर आय की असमानता कम की जाती है।

(घ) ऊँचे प्रत्यक्ष कर लगाकर आयात मदों को कम करना।

(ङ) कर लगाकर आर्थिक विकास और औद्योगिक विकास हेतु पूँजी जुटाना।

(च) करारोपण द्वारा निवेश में वृद्धि कर आर्थिक एवं सामाजिक आधारिक संरचना का ढाँचा खड़ा करना।

(ii) सार्वजनिक व्यय– राज्य सरकार, केंद्र सरकार एवं स्थानीय निकायों द्वारा किए जाने वाले व्यय को सार्वजनिक व्यय की संज्ञा दी जाती है। इसके विषय में निम्न बातें जानने योग्य हैं–

(क) सार्वजनिक व्यय उपभोग के स्तर, जीवन-स्तर, उत्पादकता के स्तर तथा नागरिकों की कार्यक्षमता के स्तर को बढ़ाने में सक्षम होता है।

(ख) सार्वजनिक व्यय आर्थिक संसाधनों के स्थानांतरण में सहायक बन जाता है।

(ग) प्रगतिशील सार्वजनिक व्यय आर्थिक विषमताओं को घटाने में सहायक बन जाता है।

(घ) सार्वजनिक व्यय वह स्रोत है, जो सार्वजनिक निर्माण कार्यों में सहयोग देकर रोजगार के नए अवसर बढ़ा सकता है।

(ङ) सार्वजनिक व्यय आर्थिक विकास का प्रेरणा-स्रोत बन जाता है।

(iii) सार्वजनिक ऋण– जब सरकार वित्तीय आवश्यकताओं को अपनी आय की मदों से पूरा करने में असमर्थ होती है, तब वह जिन बाह्य स्रोतों का सहारा लेती है, उसे सार्वजनिक ऋण कहा जाता है। इस ऋण का स्रोत देशी तथा विदेशी दोनों

हो सकते हैं। इस विषय में निम्न बातें जानने योग्य हैं–

(क) सार्वजनिक ऋण को उत्पादक कार्यों में व्यय करके उत्पादन शक्ति को बढ़ाया जाता है।

(ख) सार्वजनिक ऋण अल्प बचतों को प्रोत्साहित करते हैं।

(ग) सार्वजनिक ऋण का व्यय निर्धन वर्ग के उत्थान के लिए करके आर्थिक विषमताएँ मिटाई जा सकती हैं।

(घ) ऋणों के माध्यम से वर्तमान उपभोग को स्थगित किया जा सकता है।

(ङ) ऋणों से उपलब्ध वित्तीय संसाधनों का उपयोग करके उद्योग तथा व्यापार के क्षेत्रों में आवश्यक परिवर्तन किए जा सकते हैं।

4. भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना कब हुई? इसके कार्यों का वर्णन कीजिए।

उ०– भारतीय रिजर्व बैंक भारत का केंद्रीय बैंक है, जो 1 अप्रैल, 1935 ई० में स्थापित किया गया था। बाद में 1 अप्रैल, 1949 ई० में इसका राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इसके द्वारा निम्नलिखित कार्य किए जाते हैं–

(i) पत्र-मुद्रा का निर्गमन– भारतीय रिजर्व बैंक 1 रुपए के नोट को छोड़कर समस्त नोटों का निर्गमन न्यनूतम कोष प्रणाली के आधार पर करता है।

(ii) सरकार के बैंक के रूप में कार्य– भारतीय रिजर्व बैंक इस संदर्भ में निम्नलिखित कार्य करता है–

(क) केंद्रीय सरकार तथा राज्य सरकारों के नकद कोष रखना।

(ख) सार्वजनिक ऋणों की व्यवस्था करना।

(ग) केंद्रीय सरकार तथा राज्य सरकारों को ऋण देना।

(घ) सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय करना।

(ङ) सरकार को मौद्रिक तथा साख के लिए परामर्श देना।

(च) अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं के सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व करना।

(iii) बैंकों के बैंक के रूप में कार्य– भारतीय रिजर्व बैंक देश की संपूर्ण बैंकिंग व्यवस्था पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए निम्नलिखित कार्य करता है–

(क) विभिन्न बैंकों से उनके पास रिजर्व धनराशि जमा करवाना।

(ख) बैंकों को लाइसेंस प्रदान करना।

(ग) बैंकों के कार्यों का निरीक्षण करना।

(घ) बैंकों को आर्थिक सहायता प्रदान करना।

(iv) विदेशी विनिमय पर नियत्रंण– इस क्षेत्र में रिजर्व बैंक निम्नलिखित कार्य संपन्न करता है–

(क) भारतीय रुपए की बाह्य कीमत को स्थिर रखना।

(ख) विदेशी भुगतानों के लिए विदेशी विनिमय का प्रबंध करना।

(ग) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों हेतु विदेशी विनिमय की व्यवस्था करना।

(v) साख पर नियंत्रण– भारतीय रिजर्व बैंक साख पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए **परिणात्मक साख नियंत्रण** एवं **गुणात्मक साख नियंत्रण के उपाय** अपनाता है।

(vi) समाशोधन-गृह का कार्य– यह देश के व्यापारिक बैंकों के आपसी लेन-देन को निपटाता है। जिन स्थानों पर रिजर्व बैंक की शाखा नहीं है, यह कार्य भारतीय स्टेट बैंक द्वारा संपन्न किया जाता है।

5. भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली को स्पष्ट कीजिए तथा इसके लाभ बताइए।

उ०– सार्वजनिक वितरण प्रणाली (राशनिंग) का अर्थ– सरकार, सरकारी उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से उपभोक्ताओं को राशनकार्ड पर आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता उचित मूल्य तथा उचित माप पर कराने की जो व्यवस्था करती है, उसे सार्वजनिक वितरण प्रणाली या राशनिंग व्यवस्था कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, "सार्वजनिक वितरण प्रणाली सरकारी व्यवस्था का वह जाल है, जिसके माध्यम से दैनिक उपभोग की आवश्यक वस्तुओं को सरकारी उचित मूल्य की दुकानों की शृंखला द्वारा उपभोक्ताओं तक पहुँचाया जाता है।" सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत निम्नलिखित वस्तुएँ उपलब्ध कराई जाती हैं–

(i) गेहूँ तथा चावल, (ii) दालें तथा खाद्य तेल, सॉफ्ट कोक,
(iii) चीनी, (iv) मिट्टी का तेल,
(v) आलू, प्याज, कपड़ा तथा कागज आदि।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लाभ– सार्वजनिक वितरण प्रणाली से निम्नलिखित लाभ प्राप्त हुए हैं–

(i) सार्वजनिक वितरण प्रणाली से आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सस्ते मूल्यों पर सुनिश्चित हो गई।
(ii) सार्वजनिक वितरण प्रणाली के कारण वस्तुओं की मूल्य वृद्धि पर रोक लग गई है।
(iii) सार्वजनिक वितरण प्रणाली उत्पादकों द्वारा वस्तुओं के मनचाहे मूल्य वसूलने में बाधक बन गई है।
(iv) सार्वजनिक वितरण प्रणाली ने चोरबाजारी पर रोक लगाकर आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित कर दी है।
(v) सरकार आवश्यक वस्तुएँ उत्पादकों से उचित मूल्य पर क्रय करके सार्वजनिक वितरण प्रणाली द्वारा जनसामान्य को सस्ते मूल्य पर सुलभ कराती है।
(vi) सार्वजनिक वितरण प्रणाली निर्धनों तथा दुर्बल वर्गों के लिए 'प्राणरक्षक उपहार' बन गई है।
(vii) यह वितरण प्रणाली नागरिकों को खाद्य-सुरक्षा दिलाने में रामबाण सिद्ध हुई है।
(viii) इस वितरण प्रणाली ने आर्थिक विकास को सामाजिक न्याय तथा कल्याण के साथ जोड़ दिया है।
(ix) सार्वजनिक वितरण प्रणाली अल्प आय वाले निम्न वर्ग के लोगों के लिए उपभोग संरक्षण का आधार बनकर प्रकट हुई है।
(x) सार्वजनिक वितरण प्रणाली भारत में भुखमरी तथा कुपोषण की समस्याओं के समक्ष ढाल बन गई है।

6. भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली में क्या दोष हैं? इन्हें दूर करने के उपाय सुझाइए।

उ०– भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली के दोष– भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली निम्नलिखित कठिनाइयों के कारण दोषपूर्ण बन गई है–

(i) उचित मूल्य की दुकानों पर ठीक समय पर वस्तुओं की आपूर्ति न होने से उपभोक्ताओं को बार-बार चक्कर काटने पड़ते हैं।
(ii) उचित मूल्य की दुकानों को पर्याप्त माल की आपूर्ति नहीं हो पाती।
(iii) भ्रष्ट दुकानदार राशन की वस्तुओं को खुले बाजार में बेचकर लोगों के अधिकारों का हनन करते हैं।
(iv) सार्वजनिक वितरण प्रणाली से जुड़े सरकारी अधिकारी तथा कर्मचारी भ्रष्ट हैं, जिनके कारण यह कल्याणकारी योजना सफल नहीं हो पा रही है।
(v) उचित मूल्य की दुकानों की शृंखला दूरदराज के गाँवों तक नहीं पहुँच पाई है, जिससे उन्हें इसकी सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है।
(vi) उचित मूल्य की दुकान वाले नकली राशनकार्ड बनवाकर उनका सामान स्वयं हड़प कर जाते हैं।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली के दोषों को दूर करने के उपाय– सार्वजनिक वितरण प्रणाली के दोषों को दूर करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं–

(i) उचित मूल्य की दुकानों के खुलने का समय निश्चित कराया जाए।
(ii) उचित मूल्य की दुकानों को वस्तुओं की भरपूर आपूर्ति समयबद्ध रूप से की जाए।
(iii) भ्रष्ट दुकानदारों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाए।
(iv) राशन का सामान खुले बाजार में बेचने वाले दुकानदारों को जेल भेजा जाए।
(v) भ्रष्ट सरकारी तंत्र को ईमानदार तथा कार्यशील बनाया जाए।
(vi) सहकारी उपभोक्ता भंडारों को अधिक क्रियाशील बनाया जाए।
(vii) दूरदराज के गाँवों को उचित मूल्य की दुकानों से जोड़ा जाए।
(viii) आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति पर्याप्त मात्रा में सुनिश्चित कराई जाए।
(ix) सार्वजनिक वितरण प्रणाली को चुस्त-दुरूस्त बनाकर उपभोक्ताओं के हितों का संरक्षण किया जाए।

❖ **प्रोजेक्ट कार्य**

अध्यापक की सहायता से विद्यार्थी स्वयं करें।